विषय-सूची

पृष्ठ

प्रथम अध्याय - अनासक्तियोग (कर्मयोग): स्वरूप तथा क्षेत्र

(1) कर्म की परिभाषा 1 - 2
(2) कर्म-प्रवृत्ति तथा कर्त्ता का स्वातन्त्र्य । 2 - 4
(3) कर्म करने में स्नायविक प्रक्रिया । 4 - 6
(4) कर्मभेद :- कर्म, विकर्म, अकर्म । 6 - 9
(5) कर्म और मुक्ति । 9 -
(6) बन्धन और छुटकारा । 10 - 11
(7) कर्म और भक्ति । 11 - 16
(8) योग का अर्थ तथा उसके भिन्न-भिन्न प्रकार । 16 - 20
(9) अनासक्ति योग अथवा कर्मयोग । 20 - 22
(10) निष्काम कर्म निरूद्देश्य नहीं । 23 - 25
(11) निष्काम कर्म यज्ञ है । 25 - 27
(12) संन्यास या सांख्य और अनासक्ति योग । 27 - 28
(13) कर्म-प्रवृत्ति हमारा प्रकृतिज गुण है । 28 - 30

द्वितीय अध्याय - दिनकर काव्य में अनासक्ति की प्रोतस्विनी

उद्गम तथा प्रवाह

दिनकर काव्य में प्रवृत्ति-मार्ग 32 - 35
(क) "रेणुका" में अनासक्ति की झाँकी । 36 - 38
(ख) "परशुराम" की प्रतीक्षा में गीता का शक्ति-संदेश। 38 - 40
(ग) "हुंकार" में कर्मठ जीवन की ओजस्विता । 40 - 45
(घ) "रसवन्ती" के रस-प्रवाह में कर्मठ जीवन । 45 - 46
(ङ) द्वन्द्वगीत में निर्द्वन्द्व कर्म-साधना । 46 - 49
(च) निष्काम दयावीर "बापू" 49 - 51
(छ) "दिल्ली" में भोगासक्ति से जूझने की उन्मुक्त कर्मशीलता । 51 - 53

		पृष्ठ
(ज)	"मृत्ति तिलक" में स्पृहामुक्त स्वर ।	53-55
(झ)	"नीम के पत्ते" में संचय की कटु आलोचना तथा भागो नहीं ।	56-58
(ञ)	"नये सुभाषित" में निवृत्ति का उपहास ।	58-59
(ट)	"आत्मा की आंखें" में आसक्तिमय शोषण की निन्दा ।	59-60
(ठ)	"सामधेनी" में कर्त्तव्य-पालन की पुकार ।	60-61
(ड)	"धूप-छाँह" में नैसर्गिक निधि की खोज ।	61-62
(ढ)	"धूप और धुआँ" में निष्काम देश-सेवा का सन्देश ।	62-64
(ण)	"नील कुसुम" में लोकहित की वेदी पर निजत्व की बलि ।	64-67
(त)	"हारे को हरिनाम" में सायास कर्म तथा अनायास भोग ।	67-69
(थ)	"कोयला और कवित्व" में कर्ममात्र पर दृष्टि ।	69-74
(द)	"कुरुक्षेत्र" में क्षात्र धर्म के पालन हेतु निष्काम कर्म का सन्देश ।	74-76
(ध)	"उर्वशी" में आसक्ति हीन काम की स्थापना ।	76-78
(न)	कर्मयोग के तन्तुओं से अनुस्यूत "रश्मिरथी" ।	78-79

तृतीय अध्याय - अनासक्तियोग तथा "कुरुक्षेत्र"

(क)	1. 'कुरुक्षेत्र' में कर्म-परायणता	81-83
	2. 'कुरुक्षेत्र' और निष्काम कर्म	83-85
(ख)	"कुरुक्षेत्र" में प्रवृत्ति-मार्ग और गीतोक्त कर्मयोग ।	85-87
(ग)	1. "कुरुक्षेत्र" और कर्म की अनिवार्यता ।	87-89
	2. अनासक्ति योग का लोकसंग्रह तथा कुरुक्षेत्र की स्वनिरपेक्ष विश्वकल्याण-भावना ।	89-91
(घ)	"कुरुक्षेत्र" में पलायन का विरोध ।	91-93
(ङ.)	ज्ञान मार्ग और "कुरुक्षेत्र" ।	94-96

		पृष्ठ
§च§	'कुरक्षेत्र' में विरक्ति में अनास्था	96-101
§छ§	'कुरक्षेत्र' में भाग्यवाद का खंडन	101-104
§ज§	निष्कामता के कारण तन-मन का समान आचरण	104-105
§झ§	गहना कर्मणो गतिः	105-108
§ञ§	कामना पाप जननी	108-109
§ट§	संन्यास से योग बड़ा	109-111
§ठ§	"कुरक्षेत्र" में निवृत्ति मार्ग का खंडन	111-117
	"कुरक्षेत्र" हिन्दी गीता §निष्कर्ष§	117-126
§1§	कर्म की अनिवार्यता	119
§2§	पाप पुण्य	119-125
§3§	शठे शाठ्यं समाचरेत्	125
§4§	लोकसंग्रह की भावना	126
चतुर्थ अध्याय -	अनासक्ति योग तथा "रश्मिरथी"	127
§अ§	निष्काम कर्म तथा "रश्मिरथी"	128-131
§आ§	"रश्मिरथी" और सहजधर्म	131-156
	1. निष्काम भाव से युद्ध	133
	2. स्वापरभावशून्यता	133-136
	3. उच्चतर सद्धर्मपालन	136-139
	4. क्षात्र धर्म का पालन :-	139-156
	§क§ मैत्री-धर्म	140-143
	§ख§ बुद्धि-निर्णीत कर्त्तव्य कर्म	143-147
	§ग§ निर्बल सहाय्य	147-148
	§घ§ संपन्नता में संकट-सहायक को न भूलना- "रश्मिरथी" के शील का प्रधानतत्त्व	149-156
§इ§	"रश्मिरथी" में कुछ शुद्ध साधन कर्मयोग	156-158
§ई§	अनासक्ति योग की स्थितप्रज्ञता तथा "रश्मिरथी"	159-161

पृष्ठ

(उ) (1) रश्मिरथी में कर्मयोग के प्रवृत्ति मार्ग का समर्थन । 161 - 163

(2) दिनकर का प्रवृत्तिमार्गी परशुराम । 163 · 164

(ऊ) निष्काम शील तथा "रश्मिरथी" । 164 · 167

(ए) अनासक्तियोग में अपेक्षित भगवद् भक्ति तथा रश्मिरथी । 167 · 169

पंचम अध्याय - अनासक्ति योग और उर्वशी का कामाध्यात्म्य 170

1· उर्वशी हिन्दी गीता । 171 · 179

2· काम का स्वरूप । 179 · 180

क) प्राच्य विद्वानों की दृष्टि से काम का स्वरूप 180 · 188

ख) पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से काम का स्वरूप 188 - 190

3· उर्वशी में काम की व्याख्या । 190 · 194

(1) आसक्तिमय काम 194 · 203

(क) आसक्तिमय शुभ काम । 194 · 197

(ख) अशुभ आसक्तिमय काम तथा बलात्कार। 198 · 201

(ग) पलायन-ग्रस्त आसक्तिमय काम । 201 · 203

(2) अनासक्तिमय काम । 203 · 222

(क) उर्वशी का जैविक धरातलीय काम - न श्वेत न श्याम 203 · 208

(ख) कर्त्तव्य-भावना-परक काम । 208 · 214

(ग) उर्वशी में आध्यात्मिक काम तथा अनासक्त योग । 214 · 222

4· (1) उर्वशी में ज्ञान और कर्म के गीतोक्त दो मार्ग 222 · 223

(2) कर्मयोग अथवा अनासक्तियोग में ज्ञानयोग समाहित 224 · 26

5· उर्वशी में प्रकृति और प्रकृत जीवन । 226 · 235

उपसंहार

(सिंहावलोकन) 236 · 241

- - - - - -